जल संरक्षण से गोविन्दपुरा में आई खुशहाली

बूंद–बूंद पानी का हो रहा है उपयोग

जल स्तर वृद्धि से गांव के किसानों की बढ़ी आय

विपरीत मौसमी परिस्थितियां यानि शरीर झुलसाने देने वाली गर्मी, सीमित वर्षा भूजल में रसायनिक तत्वों का समावेश और रेतीली जमीन इनके बीच जीवन यापन करने वाले झुंझनू जिले की चिड़ावा तहसील के लोग अब पुनः खुशहाली के मार्ग पर चलने लगे हैं अन्यथा शताब्दीयों से विपरीत परिस्थितियों में रहने के आदि हो चुके थे। यहां के भूजल में फ्लोराइड का समावेश होने के कारण पानी भी पीने योग्य नहीं था और लोग इसके सेवन के कारण समय से पहले ही बूढ़े नजर आते थे। भूजल के लगातार दोहन के कारण जल स्तर भी 45 फुट से घटकर 180 फुट पर पहुंच गया था। घटते जल स्तर के कारण किसानों को सिंचाई के लिये पर्याप्त पानी नहीं मिलने की वजह से कृषि उत्पादन भी लगातार कम होता जा रहा था।

चिड़ावा तहसील क्षेत्र की इस समस्या के निराकरण के लिये रामकृष्ण जयदयाल डालमियां सेवा संस्थान ने जन सहभागिता के आधार पर योजना तैयार की जिसके तहत जल संरक्षण के लिये किये गये उपायों के बाद एक भी बूंद गांव का पानी व्यर्थ में बहकर नहीं जाता। वर्षा जल को घरों में बनाये गये पक्के टांकों (कुण्डों) में भरा जाता है जिसका उपयोग ग्रामीण पूरे साल पीने के लिये काम में लेते हैं यह पानी मीठा एवं फ्लोराइड मुक्त होने कारण लोगों को फ्लोरोसिस जैसी बीमारी नहीं होती बल्कि भावी पीढ़ी भी ताकतभर बन जाती है।

योजना के तहत संस्थान ने वर्षा जल एकत्रित करने के लिये सभी पक्के मकानों की छतों को प्लास्टिक के पाईपों से जोड़ा गया और इसे पक्के टांके से जोड़कर पुनर्भरण कूपों से जोड़ा गया है। इसी प्रकार सतह पर बहने वाले वर्षा जल का प्रवाह तालाब में लाया गया है जिससे तालाब वर्षा कल में पानी से लबालब भर जाता है। तालाब के लबालब होने से यह पानी जमीन में पहुंचकर जलस्तर को बढ़ा देता है। जल स्तर वृद्धि की जांच के लिये संस्थान ने पीजो मीटर लगा रखा है। तालाब में भरे वर्षा जल से आसपास की भूमि का जल स्तर बढ़ जाता है जिससे किसानों को उनके नल कूपों से सिंचाई के लिये अधिक पानी मिलता है। अधिक समय

तक पानी मिलने के कारण फसल उत्पादन में भी कई गुना वृद्धि हुई जिससे गांव में खुशहाली दिखाई देने लगी है।

गोविन्दपुरा की समृद्धि की कहानी अधिक पुरानी नहीं है। करीब सात वर्ष पहले रामकृष्ण जयदयाल डालमियां संस्थान ने इस गांव की समस्या को जानकर समानता, समन्वय समृद्धि के आधार पर यानि सभी ग्रामीणों की सकल सहभागिता के आधार पर योजना का क्रियान्वयन प्रारम्भ किया और गांव के सभी पक्के मकानों को प्लास्टिक के पाईपों से जोड़कर वर्षा जल एकत्रिकरण के लिये 20 हजार लीटर क्षमता का पक्का कुण्ड बनबाया। गांव में इस तरह के जनसहभागिता के आधार पर 85 कुण्डों का निर्माण कराया गया। इन जल कुण्डों पर ग्रामीणों ने जल देवता का मन्दिर भी बनाया है ताकि देव पूजन की तरह लोग कुण्ड के पानी का उपयोग देवता का प्रसाद समझकर कर सकें। इन कुण्डों से प्रत्येक परिवार का पूरे वर्ष समुचित मात्रा में पेयजल प्राप्त हो रहा है।

वर्षाजल एवं कुण्डों के ऑवरफ्लो के पानी को पाईप लाईन से जोड़कर सूखे पुनर्भरण कूपों तक ले जाया गया है इसके साथ ही गांव के रास्तों में बहने वाले वर्षाजल को भी भूमिगत जल तक पहुचाने के लिये गांवों में तालाब भी बनबाया गया है। इसके साथ ही घरों से नहाने धोने व रसोई से निकलने वाले गन्दे पानी के संरक्षण के लिये प्रत्येक घर में कच्ची कुई बनबाई गई है। जिसमें घर का गन्दा पानी जाने से पहले एक फिल्टरनुमा जाली लगाई है ताकि अधिकांश कचरा इस जाली में फिल्टर हो सके। इस कुई में एकत्रित गन्दा पानी भी भूमिगत जल में मिलकर इसकी वृद्धि करता है और गन्दे पानी के कारण गांवों के रास्तों एवं सड़कों पर गन्दगी नहीं फैलती। इससे गांवों का पर्यावरण अधिक संतुलित बनने लगा है।

तालाब के किनारे लगाये गये पीजो मीटर से प्रत्येक माह के प्रथम दिन भूमिगत जल स्तर की जांच के आंकड़े संस्थान द्वारा लिये जाते हैं आकड़ों से पता चलता है कि गोविन्दपुरा गांव में जल संरक्षण के उपाय शुरू करने के बाद जलस्तर की गिरावट में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। यही कारण है कि डालमिया संस्थान द्वारा गोविन्दपुरा गांव में बनाये गये पुनर्भरण कूपों के पास जलदाय विभाग द्वारा नलकूप लगाया है इसके बनने के बाद नलकूप से अधिक समय तक पानी प्राप्त किया जा रहा है। इस नलकूप के पानी में फ्लोराइड की मात्रा निर्धारित मानकों से अधिक होने के वजह से गांव के लोग इस पानी का उपयोग केवल नहाने धोने अथवा अन्य कार्यों में करते हैं। पेयजल के लिये तो कुण्डों का पानी ही प्रयोग में लिया जाता है।

संस्थान ने गोविन्दपुरा गांव में स्थापित की गई जलसंग्रहण प्रणाली के रखरखाव के लिये भी गांव के लोगों की ग्राम विकास समिति का गठन कर रखा है। जिसके लिये संस्थान तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान करता है। गोविन्दपुरा गांव की तरह डालमिया संस्थान ने चिड़ावा तहसील के सतरह (17) गांवों में इसी प्रकार की जलसंग्रहण प्रणाली विकसित की है। जहां पूरे गांव में वर्षा जलसंरक्षण के लिये टांको का निर्माण एवं पुनर्भरण कूपों बनाये गये हैं।गोविन्दपुरा में जलसंग्रहण इस प्रणाली से गांव में खुशहाली आई है और

अधिकांश ग्रामीण अपनी सभी स्कूल जाने योग्य बालक–बालिकाओं को बेहतर शिक्षा दिलाने के साथ उच्च अध्ययन के लिये भी बड़े शहरों में भिजवा रहे हैं।

————————————————————————